डॉ. क्रेग कीनर , रोमन्स, व्याख्यान 14, रोमियों 14: 1-15:12

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह रोमन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र 14, रोमियों 14:1-15:12 है।

रोमवासी पड़ोसी प्रेम की बात करते रहे हैं।

कुछ परंपराओं के कुछ लोग हैं जो धार्मिक कारणों से रोमन के पहले भाग को वास्तव में पसंद करते हैं, और फिर कुछ लोग ऐसे भी हैं जो एक दूसरे के साथ कैसे व्यवहार किया जाए, इसके कारणों से रोमन के बाद के हिस्सों को पसंद करते हैं। लेकिन पॉल ने पूरा पत्र लिखा। यह सब हमारे लिए महत्वपूर्ण है.

इसलिए, धार्मिक आधार तैयार करने के बाद, वह हमें एक-दूसरे से प्यार करने, एक-दूसरे तक पहुंचने और एक-दूसरे के रीति-रिवाजों का सम्मान करने के लिए कहते हैं। मेरा मतलब है, ये उन नैतिक सिद्धांतों के उल्लंघन जैसे रिवाज नहीं हैं जिनके बारे में उन्होंने बात की है। तो, आप जानते हैं, अध्याय 13, उन लोगों की तरह नहीं जो रात के हैं, जो बाहर जा रहे हैं और नशे की पार्टियाँ मना रहे हैं और इधर-उधर सो रहे हैं और इस तरह की चीजें।

वह उस बारे में बात नहीं कर रहे हैं. लेकिन एक दूसरे के रीति-रिवाजों का सम्मान करना. हमने रोमियों 14 के परिचय के बारे में बात की, कि कैसे अलग-अलग लोगों के अलग-अलग रीति-रिवाज हैं, उदाहरण के लिए, पाइथागोरस ने मनुष्यों के बारे में कैसे सोचा।

क्षमा करें, वह एक मजाक था। लेकिन साथ ही, विशेष रूप से रोमियों 14 यहूदी भोजन रीति-रिवाजों को संबोधित कर रहा है। और यहां हम देखते हैं कि यह उतना गंभीर नहीं है जितना 1 कुरिन्थियों अध्याय 8 में है, मूर्तियों को चढ़ाया जाने वाला भोजन।

इसे वास्तव में अधिक गंभीरता से लिया गया है, लेकिन पॉल दोनों में कुछ समान तर्कों का उपयोग करता है। वह वास्तव में यह पत्र कोरिंथ से लिख रहा है। तो शायद वे मुद्दे अभी भी उसके दिमाग में थे क्योंकि वह कोरिंथियन ईसाइयों के साथ काम कर रहा था, अगर उन्हें लिखने के बाद उन्हें सब कुछ ठीक से नहीं मिलता।

लेकिन हम देखेंगे. लेकिन वह श्लोक 3 और 10 में आग्रह करता है, परहेज़ करने वालों को खाने वालों का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। यदि आप कुछ प्रकार के खाद्य पदार्थों से परहेज करते हैं, तो उन्हें खाने वालों का तिरस्कार न करें।

और खाने वालों को परहेज़ करने वालों का मूल्यांकन नहीं करना चाहिए। वह यहाँ उस भाषा का प्रयोग करता है। तो, वह उन लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जिनके पास है, वे अधिक चीजें खाने में अधिक स्वतंत्र महसूस करते हैं।

उन्हें दूसरों का मूल्यांकन नहीं करना चाहिए। तो, न्याय करने के बारे में उनकी चेतावनी 14:3, 4, 10, और 13 में आती है। यह भाषा, क्रिनो और इसकी सजातीय, यह काटो क्रिनो में बहुत अधिक आती है, और पॉल के पत्र में अक्सर पहले आती है।

और यह अन्यजातियों का न्याय करने वाले यहूदियों के लिए अध्याय 2 पद 1 और 3 में आता है। खैर, यहां यह उन लोगों के लिए है जो कोषेर नहीं रखते, उन लोगों का मूल्यांकन करते हैं जो कोषेर रखते हैं। और पद 4, वह कहता है, परमेश्वर के अपने सेवकों का न्याय मत करो।

मेरा मतलब है, यह अशिष्टता से भी बदतर था। यदि किसी के पास नौकर है, तो आपको उसके नौकर को डांटने या उसके नौकर का मूल्यांकन करने का कोई काम नहीं है। खैर, अगर भगवान के नौकर हैं, तो हम भगवान के नौकर हैं।

भगवान के साथी सेवक हैं. मैं यहां नौकर शब्द का उपयोग इसलिए कर रहा हूं क्योंकि यह डोलोस , गुलाम शब्द नहीं है। यह कुछ-कुछ केट्स जैसा है ।

यह एक घरेलू नौकर की तरह है. लेकिन किसी भी मामले में, भगवान के सेवक हैं, जिनमें आप भी शामिल हैं, लेकिन दूसरों का मूल्यांकन न करें क्योंकि यह भगवान की भूमिका है। न्याय के दिन, परमेश्वर न्याय करेगा।

इसे उसके पास छोड़ दो. 1 कुरिन्थियों 9 श्लोक 19 से 23 में, हम पॉल को इस सिद्धांत को उसी तरह से जीते हुए देखते हैं जहां वह सभी लोगों के लिए सब कुछ बन जाता है। यूनानियों के लिए वह यूनानी है, यहूदियों के लिए यहूदी है, जो कानून के अधीन हैं उनके लिए वह कानून के अधीन है, जो कानून के अधीन नहीं हैं उनके लिए वह कानून के अधीन नहीं है, यद्यपि परमेश्वर की दृष्टि में, वह अभी भी परमेश्वर के नियम का पालन कर रहा है, कानून की भावना.

इसलिए, सुसमाचार के लिए, वह संदर्भ देता है, वह उन लोगों तक पहुंचता है जहां वे हैं। और सुसमाचार के लिए, हम लोगों को विश्वास से भटकाना नहीं चाहते। सुसमाचार और नैतिकता के केंद्रीय मामले बने हुए हैं, लेकिन कई विवरण, यहां तक कि नए नियम में भी, आप नए नियम के माध्यम से पढ़ते हैं, आपको ये केंद्रीय मुद्दे मिलते हैं जो यीशु के बारे में और हमें कैसे रहना चाहिए और एक दूसरे से प्यार करना चाहिए, इसके बारे में बार-बार याद आते हैं। .

लेकिन नए नियम में भी, कई विवरण विशिष्ट संस्कृतियों, सिर ढंकने, पवित्र चुंबन, या ग्रीक अलंकारिक उपकरणों के संदर्भ में हैं, जैसा कि हमने देखा है। पॉल भी पवित्र दिनों के संबंध में एक विषयांतर देने जा रहा है। तो, सिद्धांत केवल खाद्य पदार्थों पर लागू नहीं होता है, यह एक अधिक व्यापक सिद्धांत है, लेकिन यह पवित्र दिनों के लिए विषयांतर देने वाला है।

अब, इसका भोजन से कुछ लेना-देना हो सकता है, हम बाद में देखेंगे, लेकिन ऐसा नहीं हो सकता है। रोम में लोग रोमन त्योहारों के बारे में सोच सकते हैं, लेकिन आप वैसे भी वहां का खाना नहीं खाएंगे, क्योंकि मुफ्त का मांस मूर्तियों को चढ़ाया गया था। इसके अलावा, रोम में हर आठ से नौ दिन में बाज़ार के दिन होते थे और रोमन लोग अशुभ दिनों के बारे में सोचते थे।

लेकिन आपके पास यहूदी त्यौहार भी हैं, और यह इस संदर्भ में अधिक विशेष रूप से फिट होंगे। यहूदियों के बीच यहूदी त्योहारों के उचित पालन के बारे में कई बहसें थीं। यहूदिया में, एस्सेन्स जैसे सौर कैलेंडर रखने वालों और फरीसियों जैसे चंद्र कैलेंडर रखने वालों के बीच प्रमुख बहसें हुईं।

वे वास्तव में इस तरह की चीज़ों पर संगति तोड़ देंगे, और यदि आपको लगता है कि यह एक क्षेत्र के लिए विशिष्ट है, तो बाद में, आपके पास ईसाईयों द्वारा संगति तोड़ने की बात होगी, फसह की तारीख पर नहीं, बल्कि ईस्टर की तारीख पर। और वास्तव में, आयरलैंड में चर्च, रोमन नेतृत्व में आने से पहले, वास्तव में वे रोम के चर्च की तुलना में कुछ चीजों को अलग तारीखों के साथ रख रहे थे। पॉल, इससे उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा यदि आपने अभी-अभी मनाया था, आप जानते हैं, आप अन्यजातियों के त्योहार मना रहे थे, ठीक है, अब आप यहूदी त्योहार मनाते हैं।

पॉल गलातियों 4:9, और 10 में इसके बारे में बोलता है। वह इससे प्रभावित नहीं है। तो, यहां मुद्दा यहूदी त्योहारों का हो सकता है।

अब, यहाँ एक और प्रश्न है। शायद इसका संबंध सब्त के दिन से भी हो। सब्बाथ को रोमन अन्यजातियों के बीच व्यापक रूप से जाना जाता था, और कुछ सहानुभूति रखने वाले लोग थे जो यहूदी सब्बाथ का सम्मान करते थे।

रोम में बहुत से लोग जो यहूदी नहीं थे, और जो आवश्यक रूप से यहूदी आराधनालयों में भाग नहीं ले रहे थे। वे उस अर्थ में ईश्वर-भयभीत नहीं थे, हालाँकि यह उन शब्दों में से एक है जो उनके लिए इस्तेमाल किया जा सकता था। वे निश्चित रूप से मतांतरित नहीं थे।

वे आराधनालयों में नहीं जाते थे, लेकिन उनकी रुचि थी, और उन्होंने कुछ चीजें सीखीं, और वे यहूदी सब्बाथ का सम्मान करेंगे। उन्होंने अपनी रुचि या सहानुभूति दिखाने के एक तरीके के रूप में, ठीक वैसे ही जैसे यहूदी लोगों के पास सब्बाथ लैंप होते थे, दीपक बुझा दिए। अब, यहाँ सब्बाथ होने में समस्या है।

पुराने नियम में सब्बाथ की अपेक्षा थी। निर्गमन 31:35, यिर्मयाह 17, यहेजकेल 20। पुराने नियम में सब्बाथ के बारे में बहुत कुछ है।

मेरा मतलब है, यह दस आज्ञाओं में से एक है, और बाकी सभी दस आज्ञाएँ, हमें विश्वास है कि वे सभी आज हम पर लागू होती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सब्बाथ ही एकमात्र ऐसा दिन है जिसके साथ हम अलग ढंग से व्यवहार करते हैं। और पुराने नियम में, इसका उल्लंघन करना वास्तव में एक बड़ा अपराध था।

और भले ही यह यहूदी लोगों को संबोधित है, खासकर जब यह एक गंभीर अपराध है। लेकिन अन्यजाति, जो ईश्वर के मूल्यों के प्रति वफादार थे, जैसे कि यशायाह 56, श्लोक 3 से 8 में, जब यह बात की जाती है कि कैसे इन विदेशियों और नपुंसकों को मेरे कुछ लोगों की तुलना में मेरे घर में

बेहतर स्थान मिलेगा। वह कहते हैं, क्योंकि वे इन विभिन्न तरीकों से सदाचार से कार्य करते हैं, और उनके द्वारा सूचीबद्ध तरीकों में से एक यह है कि वे मेरे विश्रामदिन मानते हैं।

साथ ही, यहूदी परंपरा के संदर्भ में भी। अब, बाद की अवधि में, आपके पास शबात गोयिम, सब्बाथ गैर-यहूदी नामक कुछ है। तुम्हें पता है, ठीक है, मैं इस लाइट को चालू नहीं कर सकता, लेकिन मेरे पास एक गैर-यहूदी पड़ोसी है जो अंदर आता है और मेरे लिए लाइट जलाता है।

बहुत, बहुत रूढ़िवादी मंडलियां। हालाँकि, इस अवधि में आपके पास वह नहीं था। मिशनाह, मृत सागर स्क्रॉल, अन्यजातियों को वैसे भी सब्बाथ का पालन करना चाहिए था।

मेरा मतलब है, यह सृष्टि में चित्रित है, उत्पत्ति अध्याय 2, श्लोक 2 और 3, निर्गमन अध्याय 20 और श्लोक 11, कि भगवान ने इसे स्पष्ट रूप से सृष्टि में स्थापित किया है। वह इसका एक मॉडल, सृजन में इसका एक उदाहरण देता है। इस्राएलियों से अपेक्षा की गई थी कि वे न केवल स्वयं आराम करें, बल्कि उन्हें अपने जानवरों को भी आराम देना चाहिए था।

और समय-समय पर, हर सात साल में एक बार की तरह, भूमि पर आराम करें। आज, हम उसी सिद्धांत के लिए फसल चक्र का उपयोग करते हैं, लेकिन सिद्धांत यह है, आप जानते हैं, जाहिर तौर पर सृजन में, जिस तरह से चीजें बनाई जाती हैं, बहुत सी चीजों को आराम की आवश्यकता होती है। जीवित चीज़ों को आराम की ज़रूरत होती है ताकि वे चलते रह सकें।

यीशु ने सब्त के दिन के प्रति गलत दृष्टिकोण को चुनौती दी। उदाहरण के लिए, मैथ्यू के अध्याय 11 और श्लोक 28 में, वह कहता है, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें आराम दूंगा। और फिर वह अध्याय 12 में आगे बढ़ता है, आराम के अर्थ को लेकर उसका फरीसियों के साथ झगड़ा हो गया है।

शब्बत के बारे में यीशु के विचार का मतलब यह नहीं था कि वह सब्त के दिन बीमारों को ठीक नहीं कर सकता था। सब्त के दिन के बारे में यीशु के विचार का मतलब यह नहीं था कि उसके शिष्य अनाज की बालें नहीं ले सकते थे, जो बीनने का काम था, यह वैध था। लेकिन सब्त के दिन, अनाज को बाहर निकालने और अनाज से भूसी छीलने, या इसे अपने हाथों में पीसने के मामले में, ऐसे लोग थे जो इस काम पर विचार करते थे।

और इसलिए, फरीसी इसके लिए उनकी निंदा करना चाहते थे। और यीशु ने कहा, देखो, विश्रामदिन उत्सव का दिन है, भूखे रहने का दिन नहीं। और वह अपने कुछ वार्ताकारों की तुलना में सब्त के दिन को बहुत अलग तरीके से देखता है।

लेकिन यूहन्ना अध्याय 5 में भी, जहां यह कहा गया है कि यीशु ने सब्त के दिन को नष्ट कर दिया , इसका मतलब यह हो सकता है कि उसने सब्त के दिन को नष्ट कर दिया। लेकिन जिस तरह से इसे कहा गया है, ऐसा लगता है, ऐसा लगता है कि उनके वार्ताकार सोचते हैं कि वह कानून को कमजोर कर रहे हैं। और यीशु मूल रूप से बाइबिल तर्क देकर जवाब देते हैं।

और ज्यादातर मामलों में, वह बाइबल आधारित तर्क देकर जवाब देते हुए कहते हैं, यह वास्तव में कानून को कमजोर नहीं कर रहा है। जॉन के अध्याय 5 में, वह ईश्वर का पुत्र है, वह अनुकरण

कर रहा है, वह वही कर रहा है जो ईश्वर करता है, और उसके पास ऐसा करने का अधिकार है। और कुछ अन्य सुसमाचारों में, मनुष्य के पुत्र के पास अधिकार है।

वह सब्त के दिन का स्वामी है, उसका सब्त के दिन पर अधिकार है। तो, क्या वह सचमुच सब्त के दिन को ख़त्म कर देता है? मुझे लगता है कि गॉस्पेल में यह वास्तव में स्पष्ट नहीं है। इसके अलावा, प्रेरितों के काम की पुस्तक सातवें दिन के लिए सब्बाथ शब्द का उपयोग जारी रखती है, प्रेरितों के काम अध्याय 1 और पद 12 में सब्बाथ दिन की यात्रा के साथ।

अन्य मामलों में, आम तौर पर यह सब्त का दिन होता है जब आराधनालय की बैठक होती है। तो, यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है. इसके बाद का चर्च अलग है.

अब, नए नियम में हमारे पास क्या है यह स्पष्ट नहीं लगता है। कुछ लोग अधिनियम अध्याय 20 का हवाला देते हैं, जहां आपकी एक बैठक है, जाहिर तौर पर रविवार को। उस पर कुछ विस्तार से काम करने के बाद, मैंने निष्कर्ष निकाला कि यह शायद रविवार की शाम की बैठक है जो पूरी रात चलती है।

लेकिन इसकी शुरुआत उस दिन से होती है जिसे हम रविवार की शाम मानते हैं। 1 कुरिन्थियों 16 सप्ताह के पहले दिन धन अलग रखने की बात करता है। लेकिन यह बचत की बात हो रही है.

यह आवश्यक नहीं है कि चर्च की बैठक उसी दिन हो। व्यक्तिगत रूप से, मुझे लगता है कि पहली शताब्दी में चर्च ने सप्ताह के पहले दिन प्रभु के पुनरुत्थान के सम्मान में पहले दिन से ही बैठकें शुरू कर दी थीं, हालांकि इसके लिए सबूत उतना मजबूत नहीं है जितना कुछ लोग चाहेंगे। और मैं व्यक्तिगत रूप से सोचता हूं कि प्रकाशितवाक्य 1.10, जब यह प्रभु के दिन के बारे में बात करता है, शायद रविवार के बारे में बात कर रहा है।

लेकिन इनमें से किसी भी मामले में यह नहीं कहा गया है कि प्रभु का दिन सब्त का दिन है। इब्रानियों अध्याय 4 और पद 9, युगांतशास्त्रीय तरीके से सब्बाथ विश्राम के बारे में बात करते हैं। यह उनके विश्राम में प्रवेश करने का संदर्भ है।

लेकिन यह दूसरी सदी में है जब हमारे मन में कुछ और विचार आने लगते हैं। ख़ैर, बरनबास 15 युगांतशास्त्रीय सब्बाथ पर केंद्रित है। लेकिन इग्नाटियस, जो कि दूसरी सदी के आरंभिक चर्च फादर थे, ने मैग्नीशियनों को लिखे अपने पत्र 9.1 में सब्बाथ और प्रभु के दिन की तुलना की है।

यह यहूदी प्रथा है. यह हमारी प्रथा है. आप इससे पहले के डिडाचे के बारे में सोच सकते हैं, जो बताता है, ठीक है, यह यहूदी लोगों का उपवास करने का तरीका है।

हम ईसाइयों को इसी तरह से उपवास करना चाहिए, उनके बीच एक अंतर बनाते हुए, क्योंकि उस समय बहुत अधिक संघर्ष और वाद-विवाद चल रहा था। परन्तु सब्त का दिन प्रभु के दिन से भिन्न था। अंततः, रोमन साम्राज्य में चर्च परंपरा में रविवार को ईसाई सब्बाथ के रूप में देखा जाने लगा।

और अंततः यह स्थापित हो गया, आप जानते हैं, कॉन्स्टेंटाइन के बाद, रविवार को होना चाहिए... कॉन्स्टेंटाइन, यह एक राजनीतिक तख्तापलट था। मेरा मतलब है, सूर्य उपासकों के लिए यह सूर्य का दिन है। और यह वह दिन भी है जब यीशु मृतकों में से जी उठे थे, ताकि वह बहुत से लोगों को खुश रख सकें।

लेकिन वहाँ था...खैर, यह पूरे रोमन साम्राज्य में स्थापित किया गया था। प्रारंभिक इथियोपियाई चर्च के इतिहास में, वे अभी भी शुक्रवार सूर्यास्त से शनिवार सूर्यास्त तक सब्त का दिन मानते थे। और जहाँ तक रविवार की बात है, आख़िरकार, इथियोपियाई चर्च के इतिहास में एक ऐसा दौर आया जब वे शनिवार और रविवार दोनों मनाते थे।

और हममें से अधिकांश को इससे कोई आपत्ति नहीं होगी। वास्तव में, कुछ लोग बहुत खुश होंगे यदि हर दिन, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यही बात है। मुद्दा यह है कि हमें आराम की ज़रूरत है।

और चर्च परंपरा, यदि आप ऐसी चर्च परंपरा से आते हैं जो बाद के चर्च में धर्मशास्त्र के विकास को आधिकारिक मानता है, तो यह आपके लिए रविवार होने वाला है। यदि आप ऐसी चर्च परंपरा से आते हैं जो कहती है, हम इसे सीधे बाइबिल से प्राप्त करते हैं, और हम बाद की चर्च परंपरा से सहमत नहीं हैं, यदि यह बाइबिल का खंडन करता है, तो आप इसे शनिवार को कर सकते हैं। या आप कह सकते हैं, ठीक है, इसका सिद्धांत यह है कि हमें आराम की ज़रूरत है।

मैं जानता हूं कि मेरे जीवन में एक समय ऐसा भी आया था जब मैं इतना व्यस्त था कि मुझे एक दिन भी आराम करने का समय नहीं मिलता था। और मुझे वास्तव में जो पता चला वह यह था कि इसमें एक समस्या थी क्योंकि मैंने देखा, वास्तव में, एक लेख था जिसे मैंने शांत शनिवार के मामले के बारे में पढ़ा था, जो बहस कर रहा था, देखो, अगर हम नहीं कर सकते, तो लोग नहीं चाहते हैं नीले कानून अब और नहीं, वे रविवार नहीं चाहते। तो, आप जानते हैं, आइए उन लोगों के साथ जुड़ें जो शनिवार चाहते हैं।

लेकिन बात सिर्फ इतनी थी कि आपको एक दिन का आराम चाहिए। और कुछ चीजें जिनका मैंने अभी उल्लेख किया है, मैंने उन्हें बाइबिल में देखा है, और मैंने कहा, मुझे लगता है कि भगवान चाहते हैं कि हमें आराम का दिन मिले। और इसलिए, मैंने एक लेना शुरू कर दिया।

उस समय मैं सिर्फ डॉक्टरेट का छात्र था, मेरे पास बहुत सारा समय था। मुझे लगा कि मैं बहुत व्यस्त हूं, लेकिन उतना व्यस्त नहीं हूं जितना अब हूं। लेकिन मेरे पास करने के लिए बहुत सारे काम थे, लेकिन मैंने इसे 24 घंटों के लिए अलग रखा था, जिसे मैंने कानूनी रूप से रखा था क्योंकि अगर मैं ऐसा नहीं करता, तो मैं इसे नहीं करता।

तो, मैंने बस आराम का वह समय ले लिया। और जो मैंने पाया, ठीक है, इससे पहले, मुझे एक सप्ताह का तनाव अगले सप्ताह के तनाव में बदल जाता था, लेकिन यह एक सर्किट ब्रेकर की तरह काम करता था, कि एक सप्ताह का तनाव अंत तक चला जाता था और फिर मैं जब मैं काम करना बंद कर दूंगा तब भी थोड़ा तनावग्रस्त रहूंगा, जैसे, ओह, मैं इस काम को रोकने का

जोखिम नहीं उठा सकता। और फिर 24 घंटों के बाद, आप जानते हैं, मुझे एक नए सप्ताह का तनाव मिलेगा, लेकिन मैं पुराने सप्ताह के तनाव को इसमें नहीं ले गया।

यह एक प्रकार का सर्किट ब्रेकर था, इसलिए मैंने ओवरलोड नहीं किया। और इससे मुझे सचमुच मदद मिली। अध्ययनों से पता चला है कि यह लोगों की दीर्घायु बढ़ाता है।

तो, जाहिर तौर पर, औसतन, आपको अंत में कुछ समय वापस मिल जाता है। खैर, यहां कुछ अन्य संभावनाएं हैं कि हमें सब्बाथ के संदर्भ में इसे कैसे समझना चाहिए। शायद यह बिल्कुल व्यावहारिक है.

पॉल पहचानता है कि गैर-यहूदी दास और श्रमिक जो दूसरों के लिए काम करते थे, सब्त का पालन करने में असमर्थ थे। या शायद वह कह रहा था कि हमें इस बारे में विशेष रूप से बताने की ज़रूरत नहीं है कि यह कौन सा दिन है। एक बात जो वह कहते हैं वह यह है कि एक व्यक्ति एक दिन को दूसरे दिन से अधिक सम्मान देता है, और दूसरा हर दिन को समान रूप से सम्मान देता है।

मुद्दा यह नहीं है कि हम कह सकें, ठीक है, एक व्यक्ति एक दिन का सम्मान करता है और मैं किसी भी दिन का सम्मान नहीं करने जा रहा हूँ। मुद्दा यह है कि एक व्यक्ति एक दिन सम्मान करता है और मैं चाहता हूँ कि मैं जीवन भर प्रभु का सम्मान करता रहूँ। जाहिर है, यही आदर्श है, कि हर चीज़ को प्रभु का सम्मान करना चाहिए।

और इसलिए, ठीक है, ऐसा नहीं है कि मैं कम धार्मिक हो गया हूं या भगवान का कम सम्मान करने लगा हूं। मैं और अधिक धार्मिक, और अधिक ईश्वर का सम्मान करने वाला बन गया हूँ। या शायद यह सब्बाथ के बारे में बिल्कुल भी बात नहीं कर रहा है।

शायद अन्यजातियों को फसह और पुरीम जैसे यहूदी उद्धार के त्योहारों से छूट है। वे विशेष रूप से यहूदी उद्धार थे। तो, शायद अन्यजाति उस इतिहास से अपनी पहचान नहीं बनाएंगे।

हालाँकि, यदि हम इब्राहीम की संतान हैं, यदि हम धर्मग्रंथों के अन्य भागों के उत्तराधिकारी हैं, तो शायद, ठीक है, जो भी हो। ये ऐसी बातें हैं जिन पर बहस होती है, लेकिन अधिकांश ईसाई फसह नहीं मनाते हैं। दरअसल, अधिकांश लोग फसह नहीं मनाते हैं।

और सब्बाथ किस दिन मनाना है इस पर ईसाईयों में मतभेद है। अधिकतर इसे रविवार को रखते हैं। मैं और मेरी पत्नी वास्तव में इसे अलग-अलग दिनों में रखते हैं, लेकिन हम दोनों को आराम का एक दिन मिलता है।

और कुछ ईसाई आराम का एक दिन भी नहीं रखते, हालाँकि मुझे लगता है कि अगर वे ऐसा करते तो यह उनके लिए अधिक स्वस्थ होता। लेकिन फिर भी, ये ऐसी बातें हैं जिन पर बहस होती है। पॉल ने शायद उन चीज़ों को रखा था, और शायद अभी भी इनमें से कुछ त्योहारों को मनाता था क्योंकि वह यहूदी था, लेकिन कम से कम वह और उसके चर्च इन त्योहारों के बारे में जानते थे।

और इन पाठों से हम निश्चित रूप से इतना ही कह सकते हैं। 1 कुरिन्थियों 5.7, वह फसह की ओर संकेत करता है, और अपेक्षा करता है कि कुरिन्थियों को समझ आ जाए कि उसका क्या मतलब है। अधिनियम 20 पद 6 और पद 16, वह पिन्तेकुस्त के समय पर यरूशलेम पहुंचना चाहता है।

वह फिलिप्पी या त्रोआस, और शायद त्रोआस, नहीं, शायद फिलिप्पी में कुछ दिन अख़मीरी रोटी खाकर बिताता है। वैसे भी, ऐसा लगता है कि वह इन त्योहारों को मना रहा है, लेकिन शायद इसका एक हिस्सा यहूदी समुदाय तक पहुंच के लिए था, निश्चित रूप से पेंटेकोस्ट के लिए अध्याय 20 और श्लोक 16 में, यही आदर्श है। वह अपनी एकजुटता दिखाने के लिए वहां जाना चाहते हैं।'

वह मूल रूप से इसे फसह के समय पर करने की कोशिश कर रहा था। किसी भी मामले में, शायद यह उपवास के दिनों को संदर्भित करता है। अब, यह सुझाव वास्तव में भोजन के संदर्भ में फिट बैठता है, इसलिए वह विषयांतर नहीं कर रहा है।

प्राचीन साहित्य में विषयांतर आम थे, लेकिन शायद वह उपवास के दिनों की बात कर रहे हैं। फरीसियों, यह योम किप्पुर, प्रायश्चित के दिन के अलावा है, फरीसियों ने प्रति सप्ताह दो दिन उपवास रखा, कम से कम 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में प्रोफेसर अब्राहम ने सुझाव दिया था। उन्होंने शायद ऐसा केवल शुष्क मौसम के दौरान ही किया, लेकिन उन्होंने ड्राई फास्टिंग की, जो वास्तव में आपकी किडनी के लिए अच्छा नहीं है, लेकिन वे सप्ताह में दो दिन ड्राई फास्टिंग करते थे।

मुझे लगता है, आप इसके बारे में ट्रैक्टेट एनिट में पढ़ सकते हैं। ल्यूक ने ल्यूक अध्याय 18 और श्लोक 12 में भी कुछ इस तरह का उल्लेख किया है, जहां आपके पास मंदिर में यह फरीसी है जो कह रहा है, मैं जो कुछ भी प्राप्त करता हूं उसका दशमांश देता हूं, मैं सप्ताह में दो दिन उपवास करता हूं। खैर, अध्याय आठ और श्लोक एक में डिडाचे, संभवतः पहली शताब्दी का अंत या दूसरी शताब्दी की शुरुआत है।

पाखंडी, अविश्वासी यहूदी लोगों का जिक्र करते हुए, यहूदी लोग जो यीशु में विश्वास नहीं करते हैं, सोमवार और गुरुवार को उपवास करते हैं। प्रभु कहते हैं, कपटियों के समान मत बनो, इसलिये तुम बुधवार और शुक्रवार को उपवास करो। तो शायद यह तेज़ दिनों के बारे में बात कर रहा है।

हमें उपवास करने की आवश्यकता है या नहीं, इस संदर्भ में हमारे अलग-अलग मूल्य हैं। पौलुस कहता है, जो खाता है वह प्रभु के लिये खाता है, और जो नहीं खाता वह प्रभु के लिये नहीं खाता। किसी भी मामले में, आपको इस पर विभाजित होने की आवश्यकता नहीं है, पॉल कहते हैं।

हम जो कुछ भी करते हैं, छंद छह से नौ तक, हम प्रभु के लिए करते हैं। श्लोक छह, चाहे हम उस दिन का पालन करें या न करें, हम इसे प्रभु के लिए करते हैं। और प्रभु से उसका तात्पर्य मसीह से है क्योंकि श्लोक नौ में वह मसीह को प्रभु के रूप में पहचानता है।

हम इसे प्रभु के लिए करते हैं और ईश्वर को धन्यवाद देते हैं। और निस्संदेह, आप अपने भोजन के लिए भगवान को धन्यवाद देते हैं। यह यहूदी धर्म में एक मानक प्रथा थी और ईसाइयों ने भी इसे जारी रखा।

जो भोजन पारंपरिक और मानक बन गया, उस पर यहूदियों का आशीर्वाद था, धन्य हैं आप, हे भगवान, हमारे भगवान, जिन्होंने पृथ्वी की रोटी और शराब बनाई, दो घटक घटक जिन्हें आप भोजन पर आशीर्वाद देते हैं। धन्य हैं आप, हे भगवान, हमारे भगवान, ब्रह्मांड के राजा, जिन्होंने बेल का फल बनाया है। दूसरे को धरती से पैदा किया जाना चाहिए था।

खैर, 14:7, विश्वासियों के रूप में, हम अपने लिए नहीं जीते या मरते हैं, बल्कि हम प्रभु के लिए जीते हैं जिसके हम हैं। इसलिए, हम जो कुछ भी करते हैं वह प्रभु के लिए होना चाहिए। और हमें प्रभु की सेवा किस प्रकार करनी चाहिए, इसके बारे में हमारे अलग-अलग विचार हो सकते हैं।

निश्चित रूप से, हमारे पास अलग-अलग उपहार हैं। हमारी अलग-अलग शख्सियतें हैं. ठीक ठाक है।

मसीह का शरीर होने का जो अर्थ है उसका एक हिस्सा उन भिन्नताओं को देखना और अपनी सभी भिन्नताओं के साथ एक-दूसरे से प्रेम करना है। 14.9, मसीह दोनों मर गए और जीवित और मृत दोनों के प्रभु बन गए। वह मर गया, वह मृतकों का भगवान है।

वह जी उठा, वह जीवितों का प्रभु है। और जीवितों और मृतकों का न्यायाधीश होने का यह विचार, आपके पास अधिनियम 10.42, 2 तीमुथियुस 4.1, 1 पतरस 4.5 में है। मसीह हम सभी का प्रभु है। और इसलिए, हम जो कुछ भी करते हैं वह उसके सम्मान और महिमा के लिए होना चाहिए।

मैंने इसके बारे में पहले भी बात की है, लेकिन आप इसे पॉल के लेखन में कहीं और पाते हैं। 1 कुरिन्थियों 10:31 , पॉल के संदर्भ में वह सब कुछ कर रहा है जो उसे करने की आवश्यकता है ताकि कुछ लोगों को बचाया जा सके। वह कहता है, चाहे तुम खाओ या पीओ, जो कुछ भी करो, परमेश्वर की महिमा के लिये करो।

लोगों को इसके साथ ठोकर खाने का कारण न बनाएं। कुलुस्सियों 3:17 हमारे जीने के तरीके के बारे में बात करता है जब हमारा जीवन परमेश्वर के संदेश, श्लोक 16 में परमेश्वर के वचन से भर जाता है। आप जो भी करें, यीशु के नाम पर करें।

और वह पद 23 में नौकरों के लिए इसका एक विशिष्ट उदाहरण देता है, लेकिन हम सभी, आप जो भी करते हैं, यीशु के नाम पर करते हैं। अब व्यवहार में, क्या उसके समय में भी सभी ईसाई इसी तरह रह रहे थे? फिलिप्पियों 2, श्लोक 20 और 21 में, पॉल तीमुथियुस के बारे में कहता है, मेरे पास उसके जैसा कोई नहीं है जो अपनी व्यक्तिगत चीजों की नहीं, बल्कि केवल प्रभु की चीजों की परवाह करेगा। इसलिए हर कोई उस तरह से नहीं जीता, पूरी तरह से प्रभु के लिए।

लेकिन वह आदर्श था. हम यही चाहते हैं. हम यही प्रार्थना करते हैं कि हम चर्च के समान बनें, पूरी तरह से प्रभु के लिए जियें।

पॉल लोगों को इसी के लिए बुला रहा था। और कुछ लोग इसे जी रहे थे। अब मुझे यह कहना चाहिए कि जब पॉल कहता है कि उसके जैसा कोई नहीं है तो संभवतः इसमें अतिशयोक्ति का एक तत्व है।

सिसरो अपने अनुशंसा पत्रों में अक्सर कहते थे, मेरे पास इस व्यक्ति जैसा कोई नहीं है। वह सबसे अच्छा है। खैर, सिसरो अपनी पुस्तक में अपने 13 पत्रों में बहुत अच्छे थे, मुझे लगता है एटिकस को, नहीं, शायद उनके मित्रों को लिखे पत्र।

उसके पास ये सभी अलग-अलग अनुशंसा पत्र हैं। वह उनमें बहुत अच्छे से बदलाव करता है। लेकिन वह कभी-कभार मदद नहीं कर सका, एक से अधिक बार, उसने कहा, यह सबसे अच्छा है।

तो, ऐसा हो सकता है, पॉल का वास्तव में यह मतलब नहीं है कि कोई भी प्रभु की चीज़ों को पसंद नहीं करता, या केवल उनकी परवाह नहीं करता। लेकिन यह निश्चित रूप से, सर्वोत्तम स्थिति में भी, भले ही इसका मतलब टिमोथी से अधिक हो, यह बहुत दुर्लभ था। यद्यपि यीशु, जब वह पतरस को डाँटता है, कहता है, हे शैतान, मेरे पीछे पड़ जाओ, तुम उन चीज़ों की परवाह करते हो जिनकी लोग परवाह करते हैं, न कि उन चीज़ों की जिनकी परमेश्वर परवाह करता है, जिसका संदर्भ परमेश्वर के उद्देश्यों की पूर्ति, उनके संदेश को फैलाने से है। , भले ही आपको इसके लिए मरना पड़े।

और इस बात की परवाह करते हुए कि लोग किस चीज़ की परवाह करते हैं, हम कष्ट नहीं सहना चाहते। तो, हालाँकि, यहाँ संदेश यह है कि सब कुछ प्रभु के लिए है। और इसमें यह भी शामिल है कि हम क्या खाते हैं और क्या पीते हैं।

अगर हमें किसी और को दूर जाने से बचाने के लिए कुछ छोड़ना पड़ता है, तो आमतौर पर यह हममें से अधिकांश के लिए भोजन का मामला नहीं है, लेकिन अन्य चीजें भी हो सकती हैं। भगवान का न्याय आसन, अध्याय 14 और श्लोक 10। यह ग्रीक शब्द बेमा है।

यह रोम के मंच का मंच होगा। पॉल दरअसल , कोरिंथ में एक ऐसी जगह पर थे, जहां कोरिंथियन फोरम को रोम के फोरम की तर्ज पर बनाया गया था क्योंकि यह एक रोमन उपनिवेश था। और इसलिए, ल्यूक ने हमें प्रेरितों के काम 18 में इसके बारे में बताया है, और पॉल ने कुरिन्थियों को लिखे अपने एक पत्र में भी इसका उल्लेख किया है।

2 कुरिन्थियों 5:10 में, वह बीमा शब्द का उपयोग करता है। जैसा कि वह यहां कहते हैं, हम सभी को भगवान की शरण में आना चाहिए। वहां वे कहते हैं, हम सभी को मसीह के बीमा के सामने उपस्थित होना होगा।

ईसा मसीह दिव्य हैं, वे उसी बात की बात कर रहे हैं। रोमियों 14.10 में मुद्दा यह है कि यह निर्णय करने का हमारा स्थान नहीं है। यह हमारी जगह नहीं है.

निर्णय करना ईश्वर की भूमिका है। और हमें वह भूमिका उन पर छोड़नी होगी। आपके जैसा कुछ जेम्स में भी है.

वह कहते हैं कि मसीह में अपने भाइयों और बहनों का मूल्यांकन करना हमारा स्थान नहीं है। और उस भाषा का उपयोग करते हुए, उन्होंने पहले फिलाडेल्फिया के बारे में कहा था, भाईचारे का प्यार, भाईचारे और बहन का प्यार। क्योंकि ग्रीक में, जब यह कहा जाता है, जब आपके पास भाइयों की तरह बहुवचन होता है, तो आम तौर पर वे पुल्लिंग का उपयोग करेंगे यदि इसमें सभी पुरुष हों।

लेकिन साथ ही, अगर वहाँ एक भी पुरुष होता और बाकी सभी महिलाएँ होतीं, तो वे पुल्लिंग का उपयोग करते। इसलिए, जब यह ग्रीक में भाइयों को कहता है, तो कुछ संदर्भों में, इसका मतलब उसी तरह होता है जैसे हम आज अंग्रेजी में कहेंगे, भाइयों और बहनों, हमारे सभी साथी विश्वासियों। लेकिन आप जानते हैं, वास्तव में मुकदमे न्याय करने की बात कर रहे थे।

भाई कभी-कभी भाइयों को अदालत में ले जाते थे, विशेषकर विरासत को लेकर। यीशु को यह मंजूर नहीं था। जब वह लूका अध्याय 12 में कहता है, मुझे इसका मध्यस्थ किसने बनाया? और वह लालच के खिलाफ चेतावनी देता है.

और पॉल में भी, जब वह 1 कुरिन्थियों 6 में आपके आध्यात्मिक भाइयों और बहनों के बारे में बोलता है, तो भाई भाई के खिलाफ कानून में जाता है। यह कुछ ऐसा है जिसे घटित होने पर व्यापक समाज ने भी दुखद और शर्मनाक माना, हालाँकि यदि आप उनके प्राचीन अदालती भाषणों को पढ़ें तो ऐसा अक्सर होता था। और यहाँ, मसीह में अपने भाइयों और बहनों के साथ ऐसा करना हमारा स्थान नहीं है।

यह भगवान का स्थान है. इसे भगवान पर छोड़ दो. आपको ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है.

यह आपकी भूमिका नहीं है. और वह इसके समर्थन में धर्मग्रंथ का हवाला देता है, कि भगवान न्याय करने जा रहे हैं। यशायाह 45:23 इसे रोमियों 14:11 में उद्धृत करता है। हर घुटना मेरे सामने झुकेगा और हर जीभ मेरे सामने झुकेगी, और पॉल यहां जिस ग्रीक अनुवाद का अनुसरण करता है, उसमें वह ईश्वर की स्तुति करेगा, उसकी स्तुति करेगा।

यशायाह 45 में संदर्भ, ईश्वर ही एकमात्र मोक्ष है, न केवल इस्राएल के लिए, बल्कि अन्यजातियों के लिए भी। वह एकमात्र मोक्ष उपलब्ध है। पॉल इस पाठ को यहाँ ईश्वर पर लागू करता है।

फिलिप्पियों 2:11 में वह इस पाठ को यीशु पर लागू करता है, जो स्पष्ट रूप से यीशु पर लागू एक दिव्य पाठ है। और इसलिए, पॉल आगे कहता है, एक दूसरे का मूल्यांकन मत करो। अध्याय 14:13. और इस विचार के लिए उनका स्रोत, साथ ही इस विचार के लिए जेम्स का स्रोत, संभवतः यीशु हैं जब यीशु ने कहा था, निर्णय मत करो।

जब सुसमाचार विद्वान, अधिकांश सुसमाचार विद्वान सोचते हैं कि मैथ्यू और ल्यूक ने एक दूसरे के बजाय एक सामान्य स्रोत का उपयोग किया। फिर, यह एक बहस का मुद्दा है, लेकिन यह मानते हुए कि यह सच है, मैथ्यू 7:1 और ल्यूक 6:37, यह वह सामान्य स्रोत है। तो, यह एक ऐसा स्रोत था जो संभवतः पहले से ही प्रचलन में था।

खैर, जिस समय पॉल रोमन लिख रहा था, उस समय पॉल का लेखन पहले से ही प्रचलन में था। उस स्रोत की तारीख पर भी बहस हुई है, लेकिन कुछ लोगों ने इसके 40 के दशक में होने का तर्क दिया है। उदाहरण के लिए, गैरेथ टायसन, जुनून कथा और वह सामग्री भी।

आपके पास यूहन्ना 7:24 में कुछ ऐसा ही है, जहां यीशु कहते हैं, बाहरी दिखावे के अनुसार न्याय मत करो। तो, यह बहुप्रमाणित है। यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में अधिक संशयवादी विद्वान भी आम तौर पर सहमत होंगे कि इसकी जड़ें यीशु पर आधारित हैं।

पॉल एक ही आदर्श को प्रतिध्वनित करते हैं, एक दूसरे का मूल्यांकन न करें। और फिर उसी कविता में, वह क्रिनो शब्द के विभिन्न अर्थों पर अभिनय करता है । वह कहते हैं, एक-दूसरे का मूल्यांकन करने के बजाय, हर किसी को इसका मूल्यांकन करने दें।

इसका अक्सर अलग-अलग अनुवाद किया जाता है क्योंकि अंग्रेजी में हम इन अलग-अलग विचारों को संप्रेषित करने के लिए अलग-अलग शब्दों का उपयोग करते हैं। परन्तु यूनानी भाषा में, एक दूसरे की आलोचना करने के बजाय, हर किसी को यह निर्णय करने देना चाहिए, निंदा न करें, भाई या बहन के लिए ठोकर का कारण न बनें। पद 17 में, वह भोजन, अशुद्ध भोजन, ऐसी चीज़ों के बारे में बात कर रहा है जो लोगों को ठोकर खिलाती हैं।

और वह कहता है कि परमेश्वर का राज्य वास्तव में यही नहीं है। यह इन खाद्य पदार्थों के बारे में नहीं है. वास्तव में जो मायने रखता है वह है, पवित्र आत्मा में धार्मिकता, शांति और आनंद।

राज्य इसी बारे में है। धार्मिकता एक ऐसी चीज़ है जिसके बारे में वह अध्याय 1, श्लोक 17 से आगे से बात कर रहा है। यह रोमनों में एक प्रमुख विषय है।

और यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में पॉल पहले ही कह चुका है कि हम आत्मा द्वारा सशक्त हैं। तो, आत्मा में धार्मिकता, शांति और आनंद। अध्याय 8, 1 से 17, विशेष रूप से श्लोक 2 से 4, वह केवल इस बात पर जोर देता है कि यह पवित्र आत्मा से आता है।

गलातियों 5, श्लोक 18 से 23 तक। यह बाहरी तौर पर कानून के प्रति समर्पित होने का प्रयास नहीं है। आत्मा के द्वारा चलकर ही हम परमेश्वर के चरित्र के इन धर्मी गुणों को जीते हैं।

शांति। खैर, धार्मिकता, शांति और आनंद, हम जानते हैं कि शांति से उसका मतलब सिर्फ शांति नहीं है, निश्चित रूप से सिर्फ आपके तंत्रिका तंत्र को शांत करना नहीं है, बल्कि संबंधपरक शांति के संदर्भ में शांति है, 14, 19, बस कुछ छंद बाद में। यह वास्तव में रोमन चर्च में विभाजन से संबंधित है।

आपके पास यहूदी और गैर-यहूदी, या कम से कम कुछ लोगों के बीच कानून को लेकर यह विभाजन है, जो यहूदी और गैर-यहूदी से संबंधित है। आपको एक प्रभाग मिल गया है. पॉल 16:17 और 18 में अपने निष्कर्ष में अंत में उस पर वापस आता है।

वह बंटवारा करने वालों से सावधान रहने की बात कर रहे हैं. तो, शांति. पवित्र आत्मा हमें शांति के लिए काम करने के लिए प्रेरित करता है।

जहाँ तक, जैसा कि पॉल अध्याय 12 में कहता है, चूँकि यह हम पर निर्भर करता है, हम एक दूसरे के साथ शांति लाते हैं, शांतिदूत। धार्मिकता, शांति और आनंद. ख़ुशी हम मना सकते हैं क्योंकि हमें ईश्वर पर भरोसा है।

हम नैतिकता और भावना के बीच अंतर करते हैं, लेकिन आत्मा के कुछ फल वास्तव में भगवान में हमारे विश्वास के परिणामस्वरूप भावनात्मक आयाम रखते हैं। भजन अक्सर खुशी की बात करते हैं। कभी-कभी वे इसे व्यक्त करने और भगवान के सामने नाचने और भगवान के सामने चिल्लाने की भी बात करते हैं।

तो, आप इसे प्रेरितों के काम अध्याय 13 और पद 52 में पवित्र आत्मा से जुड़ा हुआ देखते हैं। जैसे ही वे आत्मा से भर जाते हैं, वे आनंद से भी भर जाते हैं। और गलातियों 5.22 में, वह सबसे पहले प्रेम का उल्लेख करता है जब वह आत्मा के फल का उल्लेख कर रहा होता है, क्योंकि वह पद 14 इत्यादि के संदर्भ में इसी बारे में बात कर रहा है।

और प्रेम वह है जो इसमें सब कुछ समाहित करता है। लेकिन दूसरा फल जिसका उन्होंने उल्लेख किया है वह है आनंद। और फिर तीसरी है शांति.

तो, ये पॉल की सूची में काफी ऊपर थे। यह वही पॉल है जो अध्याय 9 में कहता है, मेरे दिल में लगातार दुःख रहता है। तो इसका मतलब यह नहीं है कि शोक करने के लिए कभी समय नहीं होता है, कि कभी भी ऐसी चीजें नहीं होती हैं जिनके बारे में हम दुखी होते हैं, कभी भी ऐसा नहीं सोचते हैं हमें दुखी करो. लेकिन इसका मतलब यह है कि हमें भी यह आनंद मिलता है।

और यह हमसे परे से आता है। यह भगवान की कृपा है. यह परमेश्वर की आत्मा हमारे भीतर काम कर रही है।

वह कहते हैं कि परमेश्वर का राज्य खाने-पीने के बारे में नहीं है, बल्कि परमेश्वर का राज्य धार्मिकता, शांति और पवित्र आत्मा में आनंद के बारे में है। परमेश्वर का राज्य पवित्र आत्मा के माध्यम से हममें व्यक्त होता है। मैं यहां फिर से अपनी रोमन्स टिप्पणी से उद्धृत कर रहा हूं, क्योंकि इससे मेरा कुछ समय बच गया है।

लेकिन साथ ही, हां, ठीक है, मैं ऐसा करता हूं क्योंकि इससे मेरा कुछ समय बचता है। लेकिन जब भी मैं कुछ उद्धृत करता हूं, तो मुझे आपको यह बताना होगा कि मैं क्या उद्धृत कर रहा हूं,

क्योंकि मैं मुकदमा नहीं करना चाहता। और यहां तक कि मेरी अपनी टिप्पणी भी आमतौर पर प्रकाशक के पास कॉपीराइट है।

तो, मुझे अच्छा बनना होगा। वैसे भी, जिस तरह कानून की भावना कभी भी परमेश्वर की आत्मा का ईमानदारी से अनुसरण करने वाले जीवन का खंडन नहीं करेगी, गलातियों 5.18 और 23, यह आत्मा से भरे चरित्र से है, रोमियों 14.17, खाद्य पदार्थों के बारे में बहस के बजाय, कोई व्यक्ति सबसे उचित रूप से मसीह की सेवा करता है, 14.18। आप इब्रानियों 13.9 में कुछ वैसा ही देखते हैं। यीशु ने राज्य के बारे में उपदेश दिया। यह उनके शिक्षण में केंद्रीय था।

आप इसे सुसमाचारों में हर जगह पाते हैं। आप इसे यीशु की शिक्षाओं के सारांश कथनों में पाते हैं, जैसे मैथ्यू 4.17 या मार्क 1.14-15 में। राज्य परमेश्वर का शासन है। ग्रीक शब्द बेसिलिया और हिब्रू शब्द मकुट , विशेष रूप से शासन का उल्लेख करते हैं।

मेरा मतलब है, कभी-कभी लोग या स्थान हो सकते हैं, जिसका आमतौर पर अंग्रेजी में मतलब होता है, किंगडम का आमतौर पर मतलब होता है। लेकिन इन शब्दों का वास्तव में हिब्रू और ग्रीक में इस तरह अनुवाद किया जाता है जो अक्सर शासन, शासन और अधिकार से संबंधित होते हैं। तो अब जब मसीह जी उठे हैं और अब जब परमेश्वर की आत्मा परमेश्वर के लोगों के लिए उपलब्ध कराई गई है तो परमेश्वर का राज्य हममें कैसे व्यक्त हुआ है? खैर, परमेश्वर का राज्य, परमेश्वर का शासन हमारे अंदर पवित्र आत्मा द्वारा व्यक्त किया गया है, जैसा कि वह यहां कहते हैं।

आप इसे गलातियों 5 में भी देखते हैं, जहां पॉल कहता है, मैं यह कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, और तुम किसी भी रीति से शरीर की अभिलाषा पूरी न करोगे। ईश्वर का शासन हममें साकार हो रहा है। गलातियों 5 के श्लोक 22 और 23, जबकि एक गुण सूची, जो पिछली उपाध्यक्ष सूची के विपरीत है, कहती है कि आत्मा का फल यह है।

तत्काल पूर्ववर्ती संदर्भ में कानून के कार्यों , शरीर के कार्यों के विपरीत है। आत्मा का फल, एक पेड़ अच्छा फल लाता है यदि वह अच्छा पेड़ है जैसा कि यीशु ने कहा था। और इसलिए, हम इस फल को भोगते हैं क्योंकि यह हमारे एक नई रचना होने के स्वभाव से आता है।

यह हमारे अंदर रहने वाली आत्मा की प्रकृति से आता है, या जॉन 15 के रूप में, यीशु कहते हैं, मैं दाखलता हूं, तुम शाखाएं हो, मुझ में बने रहो और तुम बहुत फल लाओगे। हमारे अंदर यीशु के जीवन के कारण, गलातियों 2.20, जो जीवन मैं शरीर में जीता हूं, मैं परमेश्वर के पुत्र में विश्वास के द्वारा जीता हूं। और वह कहता है, वह मसीह है जो मुझ में रहता है।

तो, गलातियों 5 के श्लोक 22 और 23 में, वह आत्मा के फल के बारे में बात करता है। और ये चीजें हमसे ही पैदा हुईं क्योंकि भगवान हम में रहते हैं। और इनके खिलाफ कोई कानून नहीं है.

वह पद 18 में उन लोगों के बारे में भी बात करता है जो आत्मा के नेतृत्व में हैं और कानून के अधीन हैं। ताकि प्राचीन काल में यह व्यापक समझ हो कि कानून उन लोगों के लिए बनाया गया

है जिन्हें नियंत्रित करने की आवश्यकता है। लेकिन दार्शनिकों ने कहा कि हम सदाचार का ऐसा जीवन जीते हैं कि हमें नियंत्रित करने के लिए किसी कानून की आवश्यकता नहीं होती है।

और पॉल कहते हैं, यदि आप अपना जीवन आत्मा के अनुसार जीते हैं, यदि आप आत्मा के अनुसार चलते हैं, तो आप ईश्वर की आज्ञाओं में चलेंगे, आप उनके मार्गों पर चलेंगे, आप उन गुणों के अनुसार चलेंगे जो उनमें समाहित हैं कानून के सिद्धांत. और आप उससे भी आगे निकल जायेंगे. जैसे कि पहाड़ी उपदेश में, आप उससे आगे बढ़ जाएंगे क्योंकि यह आपके जीवन में आत्मा का फल है।

आप बस लोगों को आशीर्वाद देना चाहते हैं। आप लोगों की मदद करना चाहते हैं. आप चाहते हैं कि वे उस ईश्वर के बारे में जानें जिसकी सेवा करने के लिए हम सभी बनाये गये हैं।

परमेश्वर का राज्य, परमेश्वर का शासन पवित्र आत्मा द्वारा हममें साकार होता है। और फिर श्लोक 18 से 23 में, श्लोक 19 श्लोक 20 में तोड़ने के विपरीत निर्माण करने की बात करता है। आइए सुनिश्चित करें कि हम एक दूसरे का निर्माण करें और हम एक दूसरे को गिराएं नहीं।

खैर, निर्माण की वह भाषा पॉल में अक्सर दिखाई देती है। तुम्हें पता है, वह दूसरे की नींव नहीं बनाना चाहता, 15:20. पहला कुरिन्थियों 3:9, वह निर्माण के बारे में बात कर रहा है।

पॉल एक दूसरे को शिक्षा देते हुए अक्सर उस भाषा का प्रयोग करते हैं। प्रथम कुरिन्थियों 14, वही शब्द। यह पुराने नियम की भाषा को प्रतिध्वनित करता है जिसका प्रयोग अक्सर परमेश्वर के लोगों के लिए किया जाता था।

इसका उपयोग यिर्मयाह अध्याय 1 में किया गया है। इसका उपयोग यिर्मयाह 24 और अन्य जगहों पर किया गया है जहां भगवान अपने लोगों का निर्माण करेंगे और उन्हें नष्ट नहीं करेंगे। वह लगाएगा, उखाड़ेगा नहीं। परन्तु फिर अन्य समय में जब वे न्याय के अधीन होते थे, तो वह उन्हें उखाड़ देता था और उन्हें ढा देता था।

और कभी-कभी उसने अपने भविष्यवक्ताओं को कुछ न कुछ करने के लिए बुलाया। लेकिन भाषा का प्रयोग पहले किया जाता है. मुझे लगता है कि रूथ में इसका उपयोग ईश्वर द्वारा वंशजों आदि के माध्यम से इसराइल का निर्माण करने के लिए किया गया है।

ठीक है, जैसे परमेश्वर अपने लोगों का निर्माण करना चाहता था, वैसे ही आज पॉल अपने दिन और हमारे दिन के लिए आज की भाषा का उपयोग करता है, कि हमें एक दूसरे का निर्माण करना चाहिए। हमें परमेश्वर के लोगों की भलाई की तलाश करनी चाहिए। वह श्लोक 20 में कहता है, और टाइटस अध्याय 1 में भी कुछ ऐसा ही है। वह श्लोक 20 में कहता है, कि सब कुछ शुद्ध है, लेकिन तब नहीं जब यह किसी और के लिए ठोकर का कारण बनता है, न कि यदि यह किसी और के धर्मत्याग का कारण बनता है।

वह श्लोक 21 में कहता है कि वह मांस और शराब से भी दूर रहेगा। खैर, यह एक चरम उदाहरण है क्योंकि जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, वे रोम में कोषेर कसाई हैं और शराब

ठीक थी अगर इसे बुतपरस्त परिवाद में पेश नहीं किया जाता था जहां वे कुछ डालते थे। पॉल परिवादों की कल्पना का उपयोग करता है।

यह पुराने नियम में फिलिप्पियों अध्याय 2, 2 तीमुथियुस अध्याय 4 में परमेश्वर के लिए है, यह भी प्रकट होता है। तो, किसी भी मामले में, जब तक इसे किसी बुतपरस्त देवता पर नहीं डाला जाता, शराब भी ठीक रहेगी। लेकिन पॉल एक चरम उदाहरण दे रहा है.

अगर यह बात आती है तो मैं शाकाहारी भी बनूंगा।' मैं शराब भी नहीं पीऊंगा ताकि मेरे भाई या बहन को ठोकर न लगे। वैसे, मैं यहां शराब के बारे में कुछ कह सकता हूं क्योंकि यह एक बड़ा मुद्दा बन गया, खासकर 19वीं और 20वीं सदी में संयुक्त राज्य अमेरिका और कुछ अन्य स्थानों पर जो इससे प्रभावित थे।

क्योंकि 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, जब उन्होंने शराब को आसवित करना सीख लिया, तो उन्होंने इसे प्राकृतिक रूप से बनाने की तुलना में अधिक शक्तिशाली बनाने के तरीके खोजे। और शराब, यहाँ तक कि बीयर भी, लोग बहुत आसानी से, बहुत जल्दी नशे में आ सकते थे। और आपके पास ऐसे बहुत से आदमी थे जो अपना सब कुछ इसी पर खर्च कर रहे थे।

उनके परिवार गरीब थे. वे अपने जीवनसाथी को पीटते हुए, अपने बच्चों को मारते हुए घर जा रहे थे। और महिलाएं और बच्चे वस्तुतः इससे मर रहे थे और पुरुष इससे सड़कों पर मर रहे थे।

और इसलिए, उस समय आपके पास इंग्लैंड में साल्वेशन आर्मी थी। निश्चित रूप से अमेरिका में आपके पास स्ट्रीट मिशन इत्यादि के साथ काम करने वाले लोग थे। मैंने एक स्ट्रीट मिशन में काम करने में मदद की, हालाँकि हमारा उद्देश्य मुख्य रूप से लोगों को खाना खिलाना और उनके साथ मसीह को साझा करना था, जो सुनते थे।

लेकिन साथ ही, एक आंदोलन भी बढ़ रहा था जिसमें कहा गया था कि ये ज्यादातर सहस्राब्दी के बाद के थे। उन्होंने कहा, ठीक है, हमने गुलामी उन्मूलन के लिए काम किया। गुलामी ख़त्म हो गयी.

अगली चीज़ जिस पर हमें ध्यान देने की ज़रूरत है, हमें उस नुकसान का ध्यान रखना होगा जो नशे से हमारे समाज को हो रहा है और शराब से हमारे समाज को हो रहा है। आज अमेरिका में, हम सोच सकते हैं कि दवाएँ कई लोगों पर क्या प्रभाव डालती हैं। इसलिए, वे इसे अवैध बनाने की कोशिश कर रहे थे।

अंततः, उन्होंने इसे अवैध बना दिया और लोगों ने इसे अवैध रूप से बनाना शुरू कर दिया और आपने इससे निपटने के लिए संगठित अपराध किया इत्यादि। लेकिन कई ईसाइयों ने कहा कि हम पूरी तरह से परहेज़ करेंगे। और उनमें से कुछ ने सोचा कि इसका मतलब यह है कि, आप जानते हैं, जब यीशु ने पानी को शराब में बदल दिया, तो उसने पानी को अंगूर के रस में बदल दिया।

और विनोस का मतलब अंगूर का रस हो सकता है, लेकिन तथ्य यह है कि जो व्यक्ति भोज का प्रभारी था उसने सोचा कि इसका मतलब है, आप जानते हैं, उसने सोचा कि यह सबसे अच्छी शराब थी जिसे बाकी सभी की इंद्रियों के सुस्त हो जाने के बाद आखिरी बार बचाकर रखा गया था, आप जानते हैं पता है, यह तब होता है जब आप सबसे खराब शराब परोसते हैं, लेकिन यह सबसे अच्छी शराब है, शायद यह बताता है कि इसमें बिना किण्वित अंगूर के रस के अलावा कुछ और भी था। ठीक है, इस पर बहस हो चुकी है। वास्तव में इसके पास किण्वन का समय नहीं था।

इसे किण्वित रूप में बनाना होगा। लेकिन उस समय लोगों के पास किण्वन को एक निश्चित प्राकृतिक स्तर से अधिक बढ़ाने का कोई तरीका नहीं था। यदि यह एक निश्चित प्राकृतिक स्तर से अधिक हो गया, तो यह सिरके में बदल गया।

लेकिन उनके पास इसे किण्वित होने से बचाने का कोई तरीका भी नहीं था। आप इसे कहीं बहुत ठंडी जगह पर जमीन में गाड़ सकते हैं और शायद आप इसे कुछ समय के लिए रख सकते हैं, लेकिन आम तौर पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। लेकिन यह भी ध्यान रखें कि आम तौर पर, आप जानते हैं, यह स्वाभाविक रूप से किण्वन के एक निश्चित स्तर से आगे नहीं जा सकता है।

और आम तौर पर मेज पर भी जब वे शराब पी रहे होते हैं, तो आप जानते हैं, नियमित भोजन में, आप इसे अलग-अलग मात्रा में पीते होंगे। सबसे आम औसत संभवतः शराब के प्रत्येक भाग में दो भाग पानी था। तो इससे पहले कि आप कभी भी नशे में आएँ, मेरा मतलब है, यदि आपने इतनी अधिक शराब पी है, तो ऐसा करने से पहले आपको बहुत बार बाथरूम जाना होगा।

बाथरूम इसे कहने का अमेरिकी तरीका है। नशे में धुत्त होने से पहले आपको शौचालय जाना होगा। इसलिए, कई बार जब लोग नशे में होना चाहते थे, तो वे विशेष रूप से इसे उतना कम नहीं करते थे।

वे इसे या तो पूरी मात्रा में परोसते थे, जो थोड़ा अधिक महंगा था, या कभी-कभी ग्रीक भोजों में जहां वे नशे में होना चाहते थे, वे इसमें अलग-अलग मतिभ्रम पैदा करने वाले नशीले पदार्थ मिला देते थे। इसके अलावा, यह आपके पाचन में मदद करने के लिए भी उपयोगी हो सकता है कि इसे केवल सीधे पानी के रूप में न पियें, विशेष रूप से बहुत सारे पानी में। तो, आप जानते हैं, 1 तीमुथियुस अध्याय 4, अपने पेट और अपनी अक्सर होने वाली दुर्बलताओं के लिए थोड़ी सी शराब पियें।

मैं आमतौर पर टम्स का उपयोग करता हूं, लेकिन यदि आप अतिरिक्त कैल्शियम का निर्माण नहीं चाहते हैं, तो नमस्ते। तो, यही कहना है कि मैं शराब नहीं पीता। मैं ऐसा नहीं करता इसका कारण यह है कि अभी भी कुछ लोग हैं जो इसे ठोकर का कारण मानते हैं, या कम से कम यह उन्हें बहुत गहराई से आहत कर सकता है।

इसलिए, मैं इसे इस कारण से नहीं करता, इसलिए नहीं कि मैं स्वयं इसके विरुद्ध हूं। लेकिन हम जो कुछ भी करते हैं, हमें प्रभु का सम्मान करने के लिए करना चाहिए। अब, यदि मैं ऐसी सेटिंग में हूं जहां मेरे न करने पर लोगों को ठेस पहुंचेगी, या यदि आप ऐसी सेटिंग में जाते हैं जहां आप

एक अंतर-सांस्कृतिक माहौल में हैं और यदि आप ऐसा नहीं करते हैं तो लोगों को ठेस पहुंचेगी तो क्या होगा।' किसी जानवर की इन पकी हुई आंखों की पुतलियों को मत खाओ, जिसके बारे में कुछ दोस्तों ने मुझे बताया था कि यह उनके सामने रखी हुई थी।

अब, सिर्फ इसलिए कि आप खाना नहीं खाते, लोगों को हमेशा ठोकर नहीं लगती। ज्यादातर जगहों पर जहां मैं जाता हूं, लोग मुझसे पूछते हैं कि मैं क्या खाना चाहूंगा। मेरी पत्नी मध्य अफ़्रीका में कांगो से है।

उन्हें फ़्रांस में एक जगह खाने के लिए आमंत्रित किया गया और उन्होंने उनके लिए यह भोजन तैयार किया। भोजन में कच्ची सीपियाँ शामिल थीं। और आप इन कच्ची सीपियों के साथ क्या करेंगे, वे अभी भी जीवित थीं, आप उन्हें नींबू के साथ नीचे रख देंगे और नींबू सीपियों को मार देगा।

लेकिन उसने कहा कि जब वे नीचे जा रहे थे तो लोग उन्हें हिलते हुए महसूस कर सकते थे। मुझे वह अनुभव कभी नहीं हुआ, लेकिन उसने जो कहा वह हो सकता है। और उसने कहा मैं ये नहीं खा सकती.

मुझे ऐसा लग रहा है, नादीन, तुम मुझसे कह रही हो कि जब तुम्हारे मेज़बानों ने तुम्हारे लिए यह सारा भोजन तैयार किया था तो तुमने मना करके उन्हें नाराज कर दिया था। उन्होंने कहा कि उन्होंने अन्य भोजन भी तैयार किया और उन्हें इससे कोई परेशानी नहीं है। लेकिन किसी भी मामले में, यह सिर्फ किसी का मामला नहीं है, जैसे कि हमारे पास यह बहस एक पीढ़ी पहले संयुक्त राज्य अमेरिका में हुई थी जहां आपके पास बहुत सारे लोग थे जो कह रहे थे, ठीक है, अगर संगीत में कोई ताल है, तो यह राक्षसी है।

यह अतिशयोक्ति है. उन्होंने इसे बिल्कुल इस तरह नहीं रखा। लेकिन समकालीन ईसाई संगीत को बुरा माना जाता था।

और मुझे किसी ने बताया कि वे रिकॉर्ड, समकालीन ईसाई रिकॉर्ड जला रहे थे, और उसने राक्षसों को बाहर आते देखा। और मैंने कहा कि मुझे लगता है कि धुआं मुझे मतिभ्रम बना रहा है। लेकिन वैसे भी, उसी समय, हममें से अन्य लोग भी थे जो कह रहे थे, देखो, यह हमारी पीढ़ी के लिए प्रासंगिक है।

यह हमें लोगों तक पहुंचने और लोगों को शिष्य बनाने आदि में मदद करने के लिए प्रासंगिक है। तो, उस पर विवाद था, लेकिन यह सिर्फ एक सवाल नहीं है कि किसी व्यक्ति को क्या बुरा लग सकता है, क्या उन्हें पसंद नहीं आ सकता है। यह ऐसा मामला है जिससे उन्हें इतनी गहरी ठेस पहुँच सकती है कि इससे उनके विश्वास को ठेस पहुँच सकती है क्योंकि वे कहते हैं, ठीक है, वे ऐसा कर रहे हैं।

मुझे लगता है यह सब ठीक है. लेकिन उनके विवेक में, यह उनके साथ ठीक नहीं है। और इसलिए, वे जो कह रहे हैं वह वास्तव में यह नहीं है कि यह सब ठीक है, बल्कि यह है कि मेरे लिए पाप करना ठीक है क्योंकि वे ऐसा कर रहे हैं।

और यही हम नहीं चाहते कि घटित हो। यह आपको परेशान नहीं कर सकता है, श्लोक 22, लेकिन यह आपके भाई या बहन को परेशान कर सकता है, श्लोक 23। और हमें उन्हें ध्यान में रखना होगा, न कि केवल खुद को।

14:23 जो कुछ विश्वास से नहीं वह पाप है। मैं एक शिक्षक हूँ। और मैं विभिन्न संप्रदायों, चर्च के विभिन्न हिस्सों के लोगों को पढ़ाता हूं।

आइए देखें A से Z तक, एडवेंटिस्ट, असेम्बलीज़ ऑफ़ गॉड से लेकर Z तक क्या शुरू होता है। पारसी ईसाई नहीं हैं। हम निश्चित रूप से कट्टरपंथियों की अनुशंसा नहीं कर रहे हैं। वैसे भी, लेकिन यीशु से प्रेम करने वाले बहुत से लोग हैं।

और इसलिए, मैं विभिन्न मुद्दों से निपटना चाहता हूं। हमें विभिन्न मुद्दों से निपटना होगा क्योंकि जब हम मसीह के शरीर के विभिन्न हिस्सों से एक दूसरे से बात कर रहे हैं तो वे सामने आएंगे। तो, इसकी वजह से, हमें कुछ ऐसी चीज़ें सामने लानी होंगी जो कुछ लोगों के लिए असुविधाजनक हों, लेकिन उन्हें सामने लाना होगा ताकि हम पहचान सकें, ठीक है, हमारे भाई-बहन हैं जो इस तरह के हैं।

हमें लोगों को कुछ हद तक आगे बढ़ाने की जरूरत है। साथ ही, कुछ प्रकार के शैक्षणिक संदर्भों में यह दूसरों की तुलना में आसान है। हम नहीं चाहते कि कोई भी आस्था से विमुख हो जैसा कि हमने अभी दर्शाया है।

आपको केवल वही करना चाहिए जो आप यह जानते हुए कर सकते हैं कि आप यह कर रहे हैं और भगवान की सेवा कर रहे हैं, कि आप कुछ गलत नहीं कर रहे हैं। इसलिए, वह यहां 1423 में विश्वास पर जोर देने के लिए लौटता है। जो कुछ भी विश्वास से नहीं है वह पाप है।

ऐसा इसलिए नहीं है कि हम विवरणों के बारे में इस तरह से अधिक से अधिक चिंतित हो जाएं कि हम उन पर जुनूनी हो जाएं, बल्कि इसलिए कि हम अधिक विश्वास कर सकें, लेकिन यह सुनिश्चित करें कि हम जो कर रहे हैं वह उस व्यक्ति का सम्मान करेगा जो वास्तव में है हमारा प्रभु दूसरों को ठोकर नहीं खिलाएगा। इसलिए, वह विश्वास पर इस जोर पर लौटता है। जो कुछ भी आस्था से नहीं है, वह ईश्वर से रिश्ते की बात है।

यह महज नियमों का मामला नहीं है. खैर, मूल में कोई वास्तविक अध्याय विराम नहीं है, और 15:1 और 2 में, वह कमजोरों की मदद करने और खुद के बजाय अपने पड़ोसी को खुश करने की बात करता है। पड़ोसी की भाषा रोमनों में केवल एक और जगह दिखाई देती है, और वह रोमन 13 श्लोक 9 और 10 में है, जहाँ यह अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार करने की बात करती है।

तो यह अभी भी पूरी बात का सारांश है, अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार करना, और यह उसी का हिस्सा है, जो हमारे पड़ोसी के लिए अच्छा है, न कि केवल हमारे लिए। 15:1 और 2 आगे

क्या होता है इसके लिए एक चरम सारांश या उपदेश प्रदान करते हैं। प्राचीन साहित्य में चरम सारांश या उपदेश होना आम बात थी।

मैंने पहले इसका उल्लेख किया है। खैर, यहाँ वह रोमियों 14 के लिए ऐसा करने जा रहा है। वह पहले जो आया है उसका सारांश प्रस्तुत कर रहा है।

अगर आप इन लोगों को कमज़ोर मानते हैं तो ठीक है. कमजोरों की मदद करें. यदि आपको ऐसा करने के लिए कुछ छोड़ना पड़े, तो यह ठीक है।

अपने से अधिक अपने पड़ोसी को प्रसन्न करो क्योंकि हम अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम करते हैं। फिर वह अध्याय 15 और श्लोक 3 में ऐसा करने के एक उदाहरण की अपील करता है, कि कैसे यीशु ने खुद को खुश नहीं किया, बल्कि इसके बजाय, जैसा कि यीशु ने खुद मार्क 10.45 में कहा था, वह सेवा पाने के लिए नहीं, बल्कि सेवा करने और अपना योगदान देने के लिए आया था। जीवन हमारे लिए, बहुतों के लिए छुड़ौती है। खैर, अगर उसने हमारे लिए ऐसा किया है, तो अब वह हमें एक-दूसरे से प्यार करने के लिए कहता है जैसे उसने हमसे प्यार किया है।

यीशु का मज़ाक उड़ाया गया। मरकुस 14:58 और 64 और 65 में एक झूठे भविष्यवक्ता के रूप में उसका मज़ाक उड़ाया गया, जबकि पतरस द्वारा उसे अस्वीकार करने के बारे में उसकी भविष्यवाणी सच हो रही थी। यीशु का मज़ाक उड़ाया गया।

उस उपहास का वर्णन करने में, पॉल भजन 69 और श्लोक 9 का उपयोग करता है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वह भजन 69 का उपयोग करेगा, जैसा कि हमने पहले बताया था। यह धर्मी लोगों के कष्ट सहने का एक भजन है। और इसलिए, यह अन्य धर्मी पीड़ितों पर सामान्य तरीके से लागू हो सकता है।

यदि हमें कष्ट सहना पड़े तो यह हम पर लागू हो सकता है, लेकिन अंततः यह यीशु पर लागू होता है। वह भजन मत्ती 27:34 और यूहन्ना 2:17 में यीशु पर लागू होता है, जहां यीशु और परमेश्वर की व्यवस्था भजन की कुछ विशिष्टताओं को भी पूरा करती है। ऐसा करने से पॉल हमारे लिए जो व्याख्या प्रस्तुत करता है, वह उसे श्लोक 4 में स्पष्ट करता है। वह कहता है, जो लिखा गया था वह हमें निर्देश देने के लिए, हमें ईश्वर के तरीकों के बारे में सिखाने के लिए लिखा गया था।

वह 1 कुरिन्थियों 10 में कुछ ऐसा ही करता है, जिसका हमने उल्लेख भी किया है, जहां वह ईश्वर द्वारा इस्राएलियों को कुड़कुड़ाने और शिकायत करने, ईश्वर के सेवकों के विरुद्ध बोलने और मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन के लिए, और यौन अनैतिकता के लिए दंडित करने के बारे में बात करता है। उनका कहना है कि भगवान ने उनका न्याय किया। और वह कहता है, ये बातें, 1 कुरिन्थियों 10.11, ये बातें जो उनके साथ घटित हुईं, वस्तुतः वे वास्तव में घटित हुईं।

यह रूपक नहीं है. वे उनके साथ घटित हुए, लेकिन वे उदाहरण के तौर पर हमारे लिए लिखे गए थे। जो लोग, प्राचीन इतिहासकार, जब उन्होंने अपना इतिहास लिखा, प्राचीन जीवनीकार, एक स्पष्ट उद्देश्य जिसका वे अक्सर उल्लेख करते थे, और आप इसे अन्य प्राचीन इतिहास और जीवनियों में देख सकते हैं।

आप इसे सुसमाचारों में देख सकते हैं। आप इसे अधिनियमों में देख सकते हैं। ये बातें उदाहरण, अच्छे उदाहरण, क्या न करें के उदाहरण आदि के रूप में लिखी गई थीं।

पॉल 1 कुरिन्थियों 10 में इसका हवाला देता है। खैर, यहाँ वह कहता है, ये बातें हमें निर्देश देने के लिए लिखी गई थीं। कभी-कभी बाइबिल के विद्वानों के रूप में, हम पाठ को बहुत ही शुष्क तरीके से देख सकते हैं, बस यह कहते हुए कि इस स्थिति में उनके लिए इसका यही अर्थ था, लेकिन यह हमें धर्मग्रंथ के रूप में भी दिया गया था ताकि हम इससे खुद सीख सकें।

कुछ अंश हैं, धर्मग्रंथ के कुछ संपूर्ण खंड हैं, कुछ ऐतिहासिक खंड हैं जहां लोग कहते हैं, यह सिर्फ हमें मुक्ति के इतिहास के बारे में सिखाने के लिए है, कि क्या हुआ। लेकिन वास्तव में प्राचीन काल में इतिहास लिखने वाले लोगों का उद्देश्य, आप जानते हैं, आपको इसके मॉडल देना भी था, ताकि आप इतिहास से सबक सीख सकें। जैसा कि, आप जानते हैं, आपके माता-पिता आपको बता सकते हैं, ठीक है, जब मैं आपकी उम्र का था, मैंने यह किया था।

यह अच्छी तरह से काम नहीं कर सका, बस आपको अपने जीवन से एक सबक दे रहा हूँ। उसी तरह, पॉल यहां कहते हैं, ये बातें हमें निर्देश देने, हमें सिखाने के लिए लिखी गईं थीं। और वह हमें सांत्वना या प्रोत्साहन देने के लिए कहता है।

जिस भाषा में आप धर्मग्रंथ का जिक्र कर रहे हैं, जैसे कि भजन 119 में, कम से कम चार बार वह आराम लाने वाली बात करती है। या 2 मैकाबीज़ 15:9, सांत्वना, प्रोत्साहन, उपदेश, पैराक्लेसिस । पौलुस ने इस प्रोत्साहन का तात्पर्य धर्मग्रन्थ से किस ओर किया है? अगले श्लोक, श्लोक पाँच में एकता के आह्वान के लिए।

इस तरह वह इसे लागू कर रहा है। एकता का मतलब ये नहीं कि हमारे बीच मतभेद नहीं हैं. उन्होंने अभी अध्याय 14 में इसके बारे में बात की है।

एकता का अर्थ है कि भले ही हमारे बीच मतभेद हों, हम मसीह में भाई-बहन हैं। एकता का आह्वान करें. अब, कुछ मतभेद सचमुच गंभीर हैं और उन्हें ठीक करना होगा।

यदि यह एक धार्मिक त्रुटि है, तो मतभेद अंततः बढ़ सकते हैं और बड़े से बड़े होते जा सकते हैं। लेकिन प्यार अभी भी एक-दूसरे से बात करने और उन चीजों से निपटने का प्रयास करने का उचित तरीका है। हमारे पास कुछ पाठ भी हैं जो हमें वास्तव में गंभीर त्रुटियों के बारे में चेतावनी देते हैं जहां आप व्यक्ति को चेतावनी देते हैं, आप उन्हें दो बार चेतावनी देते हैं, फिर भी वे नहीं सुनते हैं, अब परेशान भी नहीं होते हैं।

लेकिन वे वास्तव में गंभीर त्रुटियां हैं। हमें भेद करने में सक्षम होने की आवश्यकता है। जो मुख्य बात है वह मसीह का संदेश और बुनियादी बाइबिल नैतिकता है।

लेकिन श्लोक पाँच और छह में एकता का यह आह्वान रोमनों के अब तक के संदेश को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाता है। यहूदी-गैर-यहूदी विभाजन, हमें उससे आगे निकलने की जरूरत है। हमें अपने जातीय विभाजन से ऊपर उठने की जरूरत है।

हमें अपने सांस्कृतिक विभाजन से ऊपर उठने की जरूरत है। एकता एक सामान्य विषय था. पॉल किसी भी तरह से इस बारे में बात करने वाले अकेले व्यक्ति नहीं हैं।

ग्रीक और रोमन वक्ता हर समय इसके बारे में बात करते थे। इस पर उनके पास पूरे निबंध थे। दार्शनिकों को इस बारे में बात करना पसंद था।

उन्होंने जो भाषा इस्तेमाल की उनमें से कुछ पॉल द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भाषा है क्योंकि वह निश्चित रूप से ग्रीक में लिख रहे हैं, हालाँकि सेप्टुआजेंट में आपके पास पुराने नियम के समान विचारों का अनुवाद है। एक मन का होना, एक आवाज का होना, निर्गमन 24, एक आवाज के साथ होना। उनका कहना है कि यह एकता प्रेम और एक साथ पूजा में व्यक्त होती है।

हम एक स्वर से परमेश्वर की स्तुति करते हैं। एकता एकमत नहीं है. इसका मतलब यह नहीं है कि हम हर मुद्दे पर सहमत हैं, लेकिन हम साथ मिलकर भगवान की पूजा कर सकते हैं।

और हमारी पूजा-अर्चना के तरीके भी अलग-अलग हो सकते हैं. यह सब ठीक है। हम अब भी उसी परमेश्वर की महिमा करते हैं।

एक दूसरे को वैसे स्वीकार करें जैसे यीशु ने हमें स्वीकार किया, अध्याय 15 और पद 7। खैर, जैसा कि हमने पहले कहा था, यह अध्याय 14 पद एक और तीन के विषय पर फिर से विचार करता है। और यह फिर से अंतिम उदाहरण की ओर अपील करता है, जैसे उसने पहले कुछ छंदों में किया था, यीशु का अंतिम उदाहरण।

आपके पास बाद में इफिसियों में भी ऐसी ही भाषा है, एक पत्र जिसे मैं पॉलीन मानता हूं, इफिसियों 4:32 से 5:2 तक। मसीह की तरह एक दूसरे को क्षमा करें। और वह कहता है, परमेश्वर का अनुकरण करनेवाले बनो। और वह कहता है, एक दूसरे से वैसा प्रेम रखो जैसा मसीह ने किया।

इसलिए, वह एक दूसरे को स्वीकार करने और स्वागत करने के उदाहरण के रूप में यीशु का नाम दे रहे हैं। वह कहते हैं, मसीह ने खतने की सेवा की। यह यहूदी लोगों के लिए एक शब्द था, और रोमनों के संदर्भ में इसका उपयोग करना उचित है, जहां उन्होंने पहले खतना के बारे में बात की है।

परन्तु मसीह सेवा करता है, उसने खतने की सेवा की। ऐसा उन्होंने पूर्वजों की खातिर किया। श्लोक सात में, जैसा कि वह अध्याय 11 और श्लोक 28 में कहता है, वे पूर्वजों, कुलपतियों के कारण प्रिय हैं।

उनका कहना है कि मसीह ने पूर्वजों की खातिर खतने की सेवा की। और श्लोक आठ में, मसीह ने अन्यजातियों की भी सेवा की। तो, उनके उदाहरण का अनुसरण करते हुए, आप दोनों की सेवा करते हैं।

आप जातीय आधार पर, सांस्कृतिक आधार पर, हर किसी की सेवा करते हैं। और फिर वह छंद नौ से 12 तक इसके लिए बाइबिल का समर्थन देने जा रहा है। खैर, हमने पहले देखा है कि पॉल विभिन्न बाइबिल ग्रंथों को एक साथ जोड़ता है, और यहां वह ऐसा करता है।

लेकिन इन ग्रंथों के बीच की कड़ी, इन ग्रंथों में सामान्य विशेषता यह है कि वे अन्यजातियों के बारे में बात करते हैं। और वह पूरे कैनन से उदाहरण देता है। वह अन्य उदाहरण, अतिरिक्त उदाहरण भी दे सकता था, लेकिन वह लेखों से, कानून से, और भविष्यवक्ताओं से उदाहरण देता है।

अध्याय 15 और श्लोक नौ में, वह भजन 18, श्लोक 49 का हवाला देता है। खैर, वह एक भजन था जिसका श्रेय डेविड को दिया गया था। दरअसल, 2 शमूएल 22 से, हम देखते हैं कि यह निश्चित रूप से डेविड का था।

और यह अंततः दाऊद के व्यापक शासन का संकेत दे रहा था जिसमें राष्ट्र समर्पण कर रहे थे। और अंततः, दाऊद का पुत्र राष्ट्रों पर शासन करेगा। तो, 15 और श्लोक नौ, वह स्तोत्र से उद्धृत करते हैं।

15 और पद 10, वह व्यवस्थाविवरण 32 से उद्धृत करता है, जैसा कि हमने उसे पहले 10:19 और 12:19 में करते देखा है। और मैं यहां बाइबल की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अध्ययन को फिर से उद्धृत कर रहा हूं, व्यवस्थाविवरण में इस कविता का संदर्भ राष्ट्रों को भगवान के लोगों के साथ जुड़ने के लिए आमंत्रित करता है क्योंकि भगवान उन लोगों को दंडित करेंगे जो उनका विरोध करते हैं। अध्याय 15 और श्लोक 11 में, वह भजन, भजन 117 और श्लोक 1 पर वापस जाता है। मैं भजन 118 से बहुत कुछ उद्धृत कर रहा हूं, लेकिन भजन 117 भी हालेल से है।

आप इसे भजन 119 के विपरीत सबसे छोटे भजन के रूप में जानते होंगे, जो भजन में सबसे लंबा है। वह इस से उद्धृत करता है, अन्यजाति उसकी स्तुति करें, अन्यजाति परमेश्वर की महिमा करें। और अध्याय 15 और श्लोक 12.

खैर, इसमें निश्चित रूप से बहुत स्पष्ट रूप से एक मसीहाई संदर्भ है और यह कहता है कि अन्यजातियों को उसमें आशा होगी। यह यशायाह 11:10 से है। इसलिए, वह यह दिखाने के लिए बाइबिल का समर्थन देता है कि हाँ, मसीह अपने लोगों के लिए एक सेवक था, लेकिन वह हममें से बाकी सभी लोगों के लिए भी एक सेवक था, सभी लोगों के लिए सेवा कर रहा था। और वह वही हैं जिन्होंने हमें यहां अपना उदाहरण दिया है।

हमें समान कार्य करने, एक-दूसरे की सेवा करने, एक-दूसरे से प्यार करने, अपने पड़ोसी से अपने समान प्यार करने और सांस्कृतिक मतभेदों के बावजूद एक-दूसरे का स्वागत करने और स्वीकार करने के लिए बुलाया गया है।

यह रोमन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र 14, रोमियों 14:1-15:12 है।